

7. स्वामी विवेकानन्द की अमेरिका यात्रा

- अमरदेव आंगिरस



अपने देशवासियों की दीन-हीन दशा को स्मरण रखते थे।

एक बार एक करोड़पति ने अपने राजसी भवन में आपको बड़े सम्मान से ठहराया। स्वामी जी साधारण पुरुष नहीं थे। श्रीमन्त का राजसी भवन एवं वैभव स्वामी जी को प्रभावित नहीं कर सका। स्वामी जी की ठीक वैसी ही दशा हुई जैसी भरत की ऋषि भारद्वाज के आश्रम में हुई थी। ऋषि ने भरत के स्वागत के लिए अपने तपोबल में सभी प्रकार के जागतिक भोग प्रस्तुत कर दिए, परन्तु प्राणों से प्यारे भ्राता श्री राम को मनाने के लिए जाने वाले भरत ने उन सामग्रियों की ओर देखा तक नहीं। भरत की इस स्थिति का तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में इस तरह वर्णन किया है -

संपति चकई भरतु चक्र मुनि आपसा खेलवार

ते हि निसि आश्रम पिंजरा राखे भा मिनसार।

अर्थात् "जैसे बहेलिये के द्वारा एक पिंजरे में रात भर रखे जाने पर भी चकवा-चकवी का संयोग नहीं होता, वैसे ही भारद्वाज की आज्ञा से रात भर खान-पान की सामग्रियों के बीच रहने पर भी भरत ने मन से उनका स्पर्श तक नहीं किया।" ठीक यही दशा स्वामी विवेकानन्द की हुई। श्रीमन्त के राजसी भवन के सब प्रकार की भौतिक सुख-सुविधा से सम्पन्न उस कक्ष में वे अपने देश की दरिद्रता का स्मरण करके रात भर आँसू बहाते रहे, और पल भर भी उन्हें नींद न आई।

अपने मित्रों से एक बार प्रसंगवश स्वामी जी ने अपनी स्थिति का उल्लेख करते हुए कहा था - "देश की शोचनीय दशा मुझे पाँच मिनट के लिए भी सोने नहीं देती, यहां रहते हुए मेरा मन यहां के वैभव से तनिक भी प्रभावित नहीं है।"

ऐसा था स्वामी विवेकानन्द का देश-प्रेम। सचमुच देश की आत्मा के साथ स्वामी जी की आत्मा का तादात्म्य था। तभी तो विदेशों के वैभव के बीच रहते हुए भी देश की दुर्दशा का स्मरण कर वे आँसू बहाते रहते थे। यही है देश प्रेम का वास्तविक रूप।

अभ्यास

1. विवेकानन्द ने शिकागो में किस प्रकार का भाषण दिया ?
2. भरत के प्रसंग से क्या स्पष्ट होता है ?
3. 'रामचरितमानस' में भरत के किस रूप का पता चलता है ?
4. विवेकानन्द ने देश के विषय में क्या कहा है ?

